स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा भारतीय सामाजिकता का पुनरुत्थान

–डॉ. किरण मदान
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
राजनीति–विभाग
आई.बी. (पी.जी.) कॉलेज, पानीपत

19वीं सदी को भारत के पुनःजागरण काल की सदी होने का सम्मान प्राप्त है। यही वह समय था जिस समय भारत के अनेक संतों, समाज सुधारकों और चिंतकों ने जन्म लिया तथा भारतीय समाज को नई दिशा दिखाई। भारतीय समाज में पनप रही सामाजिक कुरीतियों सामाजिक बीमारियो, जाति–पाति, छुआछूत, सती प्रथा, बाल विवाह, आदि कुरीतियों जो हिंदू धर्म तथा भारतीयों के मन को खोखला कर रही थीं।

ऐसे समय में उदय हुआ एक महान समाज सुधारक जिसने पूरे देश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूमते हुए लोगों से बात करके उनमें नई चेतना का संचार किया और समाज में फैली सामाजिक बुराइयों के प्रति जागृति पैदा की। यद्यपि स्वामी दयानंद जी वैदिक ऋषि परंपरा से संबंध रखते थे। भारत में धर्म सुधार के प्रनेताओं में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का एक विलक्षण स्थान है। बंगाल में जिस प्रकार राजा राममोहन राय ने धर्म सुधार संबंधी कार्य किए। उसी प्रकार उत्तर भारत में महर्षि दयानंद जी ने भी आर्य समाज व वेद दर्शन द्वारा सामाजिक सुधार संबंधी अनेकों कार्य किए।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी का जीवन परिचय–

एक महान योगी महर्षि क्रांतिकारी एवं समाज सुधारक दार्शनिक व्यक्ति, राष्ट्रवादी जन नेता स्वामी दयानंद जी का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के राजकोट के एक छोटे से गांव टंकारा में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूल शंकर था। स्वामी दयानन्द जी के प्रारम्भिक घरेलू जीवन की तीन घटनाएँ धार्मिक महत्त्व रखती हैं, जिनमें चौदह वर्ष की अवस्था में मूर्तिपूजा के प्रति विद्रोह की घटना तथा उन्होंने शिवलिंग पर देखा की जिस शिव के लिए

पिता जी के कहने पर उन्होंने व्रत रखा है, उस शक्तिशाली भगवान कहे जाने वाले का तो चूहा लड्डू खा रहा था। दूसरा अपनी बहन की मृत्यु से अत्यन्त दुःखी होकर संसार त्याग करने तथा मुक्ति प्राप्त करने का निश्चय स्वामी जी ने किया। इसके बाद वे इक्कीस वर्ष की आयु में विवाह का जानकर, घर से भाग गए। घर त्यागने के पश्चात् 18 वर्ष तक उन्होंने संन्यासी का जीवन बिताया। उन्होंने बहुत से स्थानों में भ्रमण करते हुए कई आचार्यों से शिक्षा प्राप्त की। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने वेदांत की शिक्षा प्राप्त की तथा अद्वैत मत में दीक्षित हुए इसलिए उनका नाम शुद्ध चैतन्य हुआ तब तब उन्हें अपनी प्रसिद्ध उपाधि दयानंद सरस्वती प्राप्त हुई, परंतु योग को अपनाते हुए उन्होंने वेदांत के सभी सिद्धांतों को छोड़ दिया। उन्होंने भारत की यात्राएं की भारत का दर्शन किया और अपने अनेक स्थानों पर अपने प्रवचन दिए। वह जयपुर से पुष्कर गए और वैदिक धर्म का प्रवचन दिया। स्वामी जी ने अजमेर में ईसाई पादरियों के साथ प्रथम शास्त्रार्थ भी किया। इसके पश्चात वह कुंभ मेले में हरिद्वार, बनारस, बिहार, बंगाल होते हुए कोलकाता पहुंचे। इस प्रकार स्वामी जी ने धीरे–धीरे समस्त उत्तर भारत की यात्रा संपन्न की और अपनी यात्रा के दौरान अनेक स्थानों पर प्रवचन देते हुए अनेकों धर्मावलंबियों के साथ शास्त्रार्थ किया और समाज में फैली हुई सामाजिक बीमारियों सामाजिक कुरीतियों के प्रति लोगों को जागृत करने का प्रयास किया। इसी दौरान स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना की और 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक अपनी एक पुस्तक प्रकाशित की। स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' को सभी धर्म का सार बताया था।[1]

साहित्य और रचनाएं :

सत्यार्थ प्रकाश

वैदिक मनुस्मृति

वेदांग प्रकाश

संस्कार विधि

करुणानिधि

धर्म सत्य विचार

संस्कृत वाक्य प्रमोद आदि।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के सामाजिक और धार्मिक सुधार :

कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था :

स्वामी जी कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के पुरजोर समर्थक थे। वे कहते थे 'जो ज्ञान की पूर्ति करे, वह ब्राह्मण है। जो सभी की सुरक्षा करता है वह क्षत्रिय है, जो निजी सामान व आपूर्ति की व्यवस्था करें वह वैश्य है, जो साफ सफाई का ध्यान रखे वही अनुसूचित समाज है। इस प्रकार उन्होंने सभी वर्णों को कर्मों के आधार पर सम्मान दिया।[2]

अनुसूचित समाज का उद्धार :

भारतीय समाज में धीरे–धीरे अनुसूचित वर्ग की स्थिति दयनीय हो गई व लोग उन्हें तिरस्कार की नजरों से देखने लगे। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसका विरोध किया व लोगों से अनुरोध किया कि वे सभी के साथ समान व्यवहार करें, इस प्रकार उन्होंने शूद्रों के उद्धार पर व्यापक जोर दिया। समाज के सभी क्षेत्रों व स्थान में उनके समानता के व्यवहार का समर्थन किया

महिलाओं को शिक्षा :

वैदिक काल में स्त्रियों का स्थान बहुत सम्मानजनक था व उन्हें भी शिक्षा का पूर्ण अंधकार था। हिंदू धर्म में कोई भी यज्ञ स्त्री के बिना पूरा नहीं माना जाता था। देवताओं के साथ देवियों का भी उल्लेख मिलता है, जिन्होंने समय–समय पर अपने ज्ञान व शक्ति का परिचय दिया। किंतु समय के साथ साथ महिलाओं को बाहर जाने या पढ़ने की अनुमति नहीं मिलती थी। स्वामी सरस्वती जी ने इस व्यवस्था का विरोध किया और महिलाओं के समान शिक्षा की बात की तथा वे महिलाओं को उच्च शिक्षा देने का समर्थन करते थे। मूर्ति पूजा, मिथ्याडंबर और असमानता, छुआछूत, श्राद्ध कर्म, बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बहु विवाह आदि का विरोध, वे महिलाओं को पुरुषों की भांति सक्षम बनाने की बात करते थे। उन्होंने पंडितों का जमकर विरोध किया । उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया और कहा कि विवाह के लिए स्त्री और पुरुष दोनों की सहजित होनी चाहिए।

विधवा विवाह :

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने विधवा विवाह के लिए एक आंदोलन चलाया व लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एक विधुर पुरुष को फिर से शादी करने का अधिकार प्राप्त है, उसी प्रकार महिला को भी यह अधिकार मिलना चाहिए। स्वामी जी का स्पष्ट् मत था कि जो राष्ट्र स्त्रियों का सम्मान नहीं करता वह विनाश की ओर जाता है।

योग व प्राणायाम का प्रचार :

उन्होंने योग व प्राणायाम का प्रचार किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इससे प्रेरित हों व इसे अपने जीवन का एक भाग बनायें। वे जगह–जगह जाकर लोगों को योग व प्राणायाम करने की महत्ता के बारे में बताते थे व उनसे मिलने वाले लाभों पर चर्चा करते थे। योग, प्राणायाम के द्वारा व्यक्तियों का शारीरिक स्वास्थय के साथ साथ उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है जो समाज के, राष्ट्र के निर्माण में सहायक होता है।

सामाजिक समानता के समर्थक :

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान समाज सुधारक थे। उनमें भरपूर जोश था, प्रखर बुद्धि थी और जब वह सामाजिक अन्याय देखते तो उनके हृदय में आग जल उठती थी। वे बार–बार कहते थे–'अगर आप आस्तिक हैं तो सभी आस्तिक भगवान के एक परिवार के सदस्य है।'[3]

एकेश्वरवाद में विश्वास और अवतारवाद का विरोध :

स्वामी दयानंद जी की ईश्वर में निष्ठा थी इसलिए वह प्रत्येक पदार्थ दो विषय के मूल में परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करते थे। स्वामी जी एकेश्वरवाद के अनुयाई थे। उन्होंने हिंदू समाज या धर्म में व्याप्त बहुदेववाद की आलोचना की और हिन्दू धर्म में प्रचलित अवतारवाद का विरोध किया। स्वामी जी के अनुसार राम व कृष्ण विष्णु का अवतार नहीं है बल्कि वह युग प्रवर्तक व सांस्कृतिक जननायक हैं।

जातिवाद के विरुद्ध शंखनाद :

स्वामी दयानंद जी ने भारत में पहले जातिवाद का हर स्तर पर विरोध किया। स्वामी जी ने अनेक प्रमाण और तर्क देकर सिद्ध किया कि इन जातियों का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है, ना ही किसी शास्त्र में इनका उल्लेख मिलता है। इसलिए जाति व्यवस्था का समह नाश होना चाहिए तथा कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था ही वेद सम्मत है जहां पर समाज के सभसी वर्गों को वेद पढ़ने का अधिकार है। उन्होंने अस्पृश्यता का विरोध किया तथा सभी हिन्दुओं से जाति बंधन तोड़कर आपस में विवाह करने का आह्वान किया।

इसी के साथ स्वामी जी ने नारी वेद पढ़ने का अधिकार का समर्थन किया, बाल विवाह, बहु विवाह का विरोध किया तथा समाज में प्रचलित पर्दा प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि अनेक सामाजिक, धार्मिक बुराइयों का विरोध करके समाज में एक नई चेतना लाने का प्रयास किया। उन्होंने वेदों को हिन्दू धर्म का आधार माना और वेदों की शिक्षाओं को फिर से स्थापित करने की कोशिश की। वेदों कों ज्ञान का अन्तिम स्त्रोत माना जाता था और हर हिन्दू को उन्हें पढ़ना और सुनना जरूरी था। भारतीय समाज को पुनः एकजुट करने के लिए समाज में सामाजिकता और आर्थिक, राजनीतिक स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने एक नारा दिया 'वेदों की ओर लौटों'[4]

निष्कर्ष :

स्वामी दयानंद जी ने एक समाज सुधारक के रूप में भारतीय समाज को झकझोर दिया, जो पतन की तरफ बढ़ रहा था। उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से भारत में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक बुराइयों का अंत किया तथा समाज के व्यक्तियों के चरित्र का उत्थान किया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अंधविश्वासों और रूढ़ियों, बुराइयों व पाखण्डों को खण्डन व विरोध किया। सन् 1867 के हरिद्वार कुम्भ मेले में धर्म प्रचार करने के उद्देश्य से आए थे। इसी के साथ–साथ उनके स्वदेशी व राष्ट्रवाद संबंधी विचारों को भी नहीं भूला जा सकता। स्वामी दयानंद जी ने अपने विचारों को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की जो आज भी समाजसेवा के कार्य कर रहा है। इस प्रकार हम स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा भारत व भारत के लोगों को एकजुट करने के प्रयासों को कभी भूल नहीं सकते और भारतीय समाज उनके द्वारा किए गए अथक प्रयासों का हमेशा ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 1997
2. पंडित राकेश रानी, स्वामी दयानंद जीवन, चरित्र एवं श्रद्धांजलि, दयानंद संस्थान, नई दिल्ली
3. अमरनाथ वर्मा, स्वामी दयानंद जी के विचारों का विश्लेषात्मक अध्ययन, वोल्यूम–8, दिसम्बर 2020
4. डॉ. एस.एस. नंदा, भारतीय राजनीजतक विचारक, मॉडर्न पब्लिकेशन, दिल्ली, 2014